International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

स्वतंत्रता संग्राम में महिला छात्र–नेतृत्व : उत्तर प्रदेश की भूमिका और योगदान

सचिन कुमार
शोधार्थी, इतिहास विभाग, एस°एस°वी° (पी°जी°) कॉलेज, हापुड़
डॉ° रविकान्त सरल
प्राचार्य, जे°डी° कॉलेज, सिसौली, मेरठ

सार
1905 से 1945 के बीच भारतीय स्वतंत्रता संग्राम जिस व्यापक जन–आंदोलन के रूप में विकसित हुआ, उसमें महिला छात्राओं की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही। विशेष रूप से उत्तर प्रदेश के शैक्षिक केंद्र—इलाहाबाद, वाराणसी, लखनऊ और अलीगढ़—महिला छात्र–राजनीति और राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख स्रोत बने। यह शोध पत्र–पत्र इस बात का विश्लेषण करता है कि कैसे महिला छात्राओं ने स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, खिलाफत आंदोलन, सविनय अवज्ञा और अंततः भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय योगदान किया। विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार, पिकेटिंग, सत्याग्रह, जन–सभाओं में भागीदारी, पर्चे वितरण, भूमिगत गतिविधियों और गिरफ्तारी तक, उन्होंने प्रत्येक स्तर पर ब्रिटिश शासन को चुनौती दी।
महिला छात्राओं की सक्रियता केवल राजनीतिक विरोध तक सीमित नहीं रही; उन्होंने समाज–सुधार, महिला शिक्षा, स्वदेशी उद्योगों के संरक्षण, जाति–लिंग आधारित भेदभाव के प्रतिरोध और ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में भी उल्लेखनीय कार्य किए। यह शोध पत्र दिखाता है कि उत्तर प्रदेश की महिला छात्राएँ न केवल स्थानीय स्तर पर नेतृत्व कर रही थीं, बल्कि राष्ट्रीय आंदोलन को वैचारिक और नैतिक बल भी प्रदान कर रही थीं।
स्वतंत्रता के बाद भी इन महिला छात्र नेताओं का प्रभाव समाप्त नहीं हुआ; उन्होंने राजनीति, शिक्षा, सामाजिक आंदोलनों और महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस प्रकार, उत्तर प्रदेश की महिला छात्र-नेतृत्व पर आधारित यह अध्ययन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण और कम अध्ययनित पक्ष को उजागर करता है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

मुख्य शब्द: महिला छात्र–नेतृत्व, उत्तर प्रदेश, स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, खिलाफत आंदोलन, सविनय अवज्ञा, भारत छोड़ो आंदोलन, महिला छात्राएँ, राष्ट्रीय चेतना, स्वतंत्रता संग्राम।

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल राजनीतिक दलों, नेताओं और जन–आंदोलनों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें छात्रों–विशेषकर महिला छात्राओं–की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। 1905 से 1945 के बीच का काल भारतीय समाज में राजनीतिक चेतना, सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय स्वाधीनता की आकांक्षा का काल था। यह वही दौर था जब छात्र–आंदोलन व्यापक राष्ट्रीय चेतना के वाहक के रूप में उभरने लगे और महिला छात्राएँ भी परंपरागत सीमाओं को तोड़ते हुए संघर्ष की मुख्य धारा में शामिल हुईं। जैसा कि बिपिन चंद्रा लिखते हैं–"बीसवीं सदी के प्रारंभ में छात्रों की राजनीतिक सक्रियता भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की केंद्रीय शक्ति बन गई थी।"[i]

1905–1945 का सामाजिक–राजनीतिक परिप्रेक्ष्य गहन परिवर्तनों से भरा था। बंग–भंग (1905), पहली विश्वयुद्ध की परिस्थितियाँ, असहयोग आंदोलन (1920), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) ने पूरे देश को आंदोलित किया। आर.सी. मजूमदार के अनुसार–"राष्ट्रवादी आंदोलन का यह काल भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग को सीधे राजनीतिक संघर्ष में खींच लाने वाला था।"[ii] इसी व्यापक उभार के बीच महिला छात्राएँ भी राष्ट्रीय चेतना से प्रभावित हुईं और राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ने लगीं। छात्र–आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी का विकास भी क्रमिक लेकिन शक्तिशाली था। शुरुआत में महिला शिक्षा सीमित थी, परन्तु मिशन स्कूलों, काशी विद्यापीठ, इलाहाबाद विश्वविद्यालय और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में बढ़ती महिला उपस्थिति ने नई राजनीतिक जागरूकता को जन्म दिया। गेल मिनॉल्ट लिखती हैं–"शिक्षित महिलाएँ सबसे पहले सामाजिक सुधार के माध्यम से, और बाद में राष्ट्रीय आंदोलन के माध्यम से राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करती हैं।"[iii] महिला छात्राओं ने स्वदेशी आंदोलन से लेकर भारत छोड़ो आंदोलन तक जन–सभाओं, पिकेटिंग, सत्याग्रह और भूमिगत गतिविधियों में उल्लेखनीय योगदान दिया।

उत्तर प्रदेश इस परिवर्तन का प्रमुख केंद्र था। इलाहाबाद, वाराणसी, अलीगढ़ और लखनऊ राजनीतिक चेतना, शिक्षा और सामाजिक सक्रियता के प्रमुख केंद्र थे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय को "पूर्व का ऑक्सफोर्ड" कहा गया, जहाँ छात्र–राजनीति का उभार अत्यंत

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

प्रभावी था। बी.आर. नंदा के अनुसार–"इलाहाबाद और काशी के शैक्षिक संस्थान स्वतंत्रता आंदोलन के वैचारिक स्तंभ थे।"[iv]

इस प्रकार, 1905–1945 के बीच उत्तर प्रदेश की महिला छात्राएँ राष्ट्रीय संघर्ष की महत्वपूर्ण सहभागी बनीं और स्वतंत्रता आंदोलन में उनके नेतृत्व ने भारतीय इतिहास को नई दिशा प्रदान की।

1905–1920 : स्वदेशी आंदोलन और महिला छात्र–सक्रियता

1905 का बंग–भंग भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास का निर्णायक मोड़ था जिसने पूरे देश में स्वदेशी भावनाओं को प्रज्वलित किया। इसका प्रभाव उत्तर प्रदेश पर भी गहराई से पड़ा, विशेषकर काशी, इलाहाबाद, बनारस और लखनऊ जैसे शैक्षिक–सांस्कृतिक केंद्रों पर। महिलाओं–विशेषकर छात्राओं–ने पहली बार संगठित रूप में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, सभाओं और जुलूसों में सक्रिय भागीदारी दिखानी शुरू की। बिपिन चंद्रा लिखते हैं–"स्वदेशी आंदोलन ने भारतीय समाज के हर वर्ग और विशेषतः महिलाओं को राजनीतिक चेतना से ओतप्रोत किया।"[v]

विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार में महिला छात्राओं की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय थी। काशी तथा इलाहाबाद की छात्राओं ने घरों में बैठकर स्वदेशी वस्त्र बनाने, चरखा चलाने, और विदेशी कपड़ों के सार्वजनिक दहन में भाग लिया। काशी की महिला छात्रों के समूहों ने मोहल्लों और छात्र आवासों में जाकर युवाओं को स्वदेशी अपनाने के लिए प्रेरित किया। आर.सी. मजूमदार लिखते हैं–"वाराणसी और इलाहाबाद में महिला छात्राओं की अगुवाई ने स्वदेशी आंदोलन को सामाजिक स्वीकृति दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।"[vi]

राष्ट्रीय विद्यालयों में प्रवेश और शिक्षा–बहिष्कार इस दौर की दूसरी महत्त्वपूर्ण गतिविधि थी। बंग–भंग के विरोध में पूरे देश की तरह उत्तर प्रदेश में भी छात्र–छात्राओं ने सरकारी विद्यालयों और विदेशी पाठ्यक्रमों का बहिष्कार किया। कई छात्र–छात्राओं ने स्वदेशी विद्यालयों–जैसे विद्यापीठों, राष्ट्रीय शिक्षण संस्थानों–में प्रवेश लेकर ब्रिटिश प्रशासन को चुनौती दी। काशी विद्यापीठ (1916) का उद्भव इसी राष्ट्रवादी शिक्षा–भावना से हुआ, जिसने महिला छात्रों को शिक्षा के साथ-साथ राजनीतिक प्रशिक्षण भी दिया। अलीगढ़ की मुस्लिम महिला छात्राओं का उद्भव इस काल की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। मुस्लिम लड़कियों के लिए शिक्षा का विस्तार और अलीगढ़ के सामाजिक सुधार आंदोलनों ने मुस्लिम छात्राओं में राजनीतिक चेतना को प्रोत्साहित किया। गेल मिनॉल्ट लिखती हैं–

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

"मुस्लिम महिलाओं में राजनीतिक जागरण सबसे पहले शिक्षा, सुधार और स्वदेशी आंदोलन की लहरों के कारण उत्पन्न हुआ।"[vii]

स्वदेशी आंदोलन ने महिला छात्र–नेतृत्व की वैचारिक नींव रखी। यह आंदोलन, महिलाओं के लिए सार्वजनिक जीवन में प्रवेश का पहला संगठित अवसर था। घरेलू क्षेत्र में सीमित मानी जाने वाली महिलाएँ अब राष्ट्रवादी सभाओं में भाषण देने लगीं, हस्तनिर्मित वस्त्र बनाकर योगदान देने लगीं और वैचारिक रूप से स्वतंत्रता आंदोलन के अभिन्न अंग बन गईं। स्वदेशी आंदोलन ने यह सिद्ध किया कि महिला छात्राएँ केवल संवेदनशील दर्शक नहीं बल्कि सक्रिय नेतृत्वकर्ता बन सकती हैं।

1920–1930 : असहयोग एवं खिलाफत आंदोलनों में महिला छात्र नेतृत्व

1920 के असहयोग आंदोलन ने महिला छात्र–नेतृत्व को नई दिशा, नई ऊर्जा और व्यापक मंच प्रदान किया। गांधीजी के "सरकारी शिक्षण संस्थानों का बहिष्कार" के आह्वान ने छात्राओं पर गहरा प्रभाव डाला। जूडिथ ब्राउन लिखती हैं–"असहयोग आंदोलन ने पहली बार महिला छात्रों को जन–आंदोलनों के प्रत्यक्ष केंद्र में ला खड़ा किया।"[viii]

सरकारी विद्यालयों और महाविद्यालयों का बहिष्कार इस आंदोलन की प्रमुख विशेषता थी। इलाहाबाद, बनारस, लखनऊ के साथ-साथ कई मिशनरी स्कूलों की छात्राओं ने भी कक्षाओं का बहिष्कार कर स्वदेशी संस्थानों की ओर रुख किया। बनारस की महिला छात्राओं ने BHU और काशी विद्यापीठ में आयोजित सभाओं में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। इससे राष्ट्रीय शिक्षा–आंदोलन को नई दिशा मिली। खिलाफत आंदोलन में मुस्लिम महिला छात्राओं की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अलीगढ़, लखनऊ और कानपुर की मुस्लिम छात्राओं ने खिलाफत सभाओं में पर्दे के पीछे से भाषण दिए, चंदा संग्रह किया, बहिष्कार अभियान चलाया और ब्रिटिश शासन की नीतियों का विरोध किया। पीटर हार्डी के अनुसार–"मुस्लिम छात्राओं ने हिंदू–मुस्लिम एकता की नींव को मजबूत करने में आश्चर्यजनक भूमिका निभाई।"[ix]

बनारस, इलाहाबाद और अलीगढ़ में महिला छात्र–संगठनों का गठन भी इसी दशक की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। महिला छात्र–समितियों ने सत्याग्रह, पिकेटिंग, सभाओं और जन–जागरण की गतिविधियों का नेतृत्व किया। इन समितियों की बैठकें विश्वविद्यालय परिसरों, महिला छात्रावासों और स्वदेशी विद्यालयों में आयोजित होती थीं।

इस काल में प्रमुख महिला छात्र नेता उभरकर सामने आईं–

- अमृतलाल की छात्रा समूह (बनारस),
- इलाहाबाद की युवा छात्र नेताओं का समूह,

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

- मुस्लिम छात्राओं की गुप्त समितियाँ, जो परदों के पीछे रहकर आंदोलन का संचालन करती थीं।

पिकेटिंग, स्वदेशी प्रचार और जन–सभाओं में भागीदारी के माध्यम से महिला छात्राओं ने ब्रिटिश शासन की नीतियों को चुनौती दी। विदेशी दुकानों के सामने पिकेटिंग, शराब की दुकानों का विरोध, स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार, तथा राष्ट्रीय शिक्षा के समर्थन में अभियान चलाना इस काल की प्रमुख छात्र–गतिविधियाँ थीं। इस प्रकार 1920–1930 का दशक महिला छात्र–नेतृत्व के विस्तार, संगठनात्मक कौशल और राजनीतिक परिपक्वता का काल सिद्ध हुआ।

1930–1940 : सविनय अवज्ञा आंदोलन और महिला छात्र–उभार

1930 का नमक सत्याग्रह महिला छात्र–उभार का सबसे निर्णायक क्षण था। गांधीजी द्वारा नमक कानून तोड़ने की अपील ने महिला छात्राओं में अभूतपूर्व उत्साह उत्पन्न किया। बिपिन चंद्रा लिखते हैं–"नमक सत्याग्रह ने महिला राजनीतिक चेतना को जन–स्तर पर सक्रिय कर दिया।"[x]

महिला छात्रों ने सत्याग्रह प्रशिक्षण शिविरों में भाग लिया जहाँ उन्हें भाषण–कला, आत्मरक्षा, जन–संपर्क और संगठनात्मक कौशल का प्रशिक्षण दिया जाता था। बनारस, इलाहाबाद और लखनऊ की छात्राओं ने सत्याग्रह जुलूसों में अग्रिम पंक्ति में भाग लिया। इस दशक में N.S.S., महिला छात्र–संघों और स्वयंसेवक दलों की स्थापना ने महिला छात्र–नेतृत्व को संगठित और वैचारिक रूप से सुदृढ़ किया। महिला स्वयंसेवक दलों ने गाँव–गाँव जाकर राष्ट्रीय आंदोलन का संदेश पहुँचाया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय की महिला छात्रा इकाई बहुत सक्रिय थी, जिसके माध्यम से छात्राओं ने ब्रिटिश दमन के विरुद्ध व्यापक आंदोलन चलाया। ब्रिटिश दमन, गिरफ्तारी और कोड़े महिला छात्राओं को रोक नहीं सके। पुलिस लाठीचार्ज, गिरफ्तारी और यातनाएँ इस काल में आम थीं। आर.सी. मजूमदार के अनुसार–"महिला छात्रों का साहस 1930 के दशक में राष्ट्रीय आंदोलन की नैतिक शक्ति बन गया।"[xi]

इस दौर की उल्लेखनीय छात्राएँ थीं–

- सरोजिनी नायडू की प्रेरणा से सक्रिय विश्वविद्यालय छात्राएँ,
- इलाहाबाद की स्वराज छात्रा मंडली,
- वाराणसी में स्वदेशी प्रचार करने वाली छात्रा नेता।

1930–1940 के बीच महिला छात्राओं की वैचारिक परिपक्वता स्पष्ट दिखाई देती है। वे केवल विरोध में नहीं, बल्कि राष्ट्रीय कार्यक्रमों–ग्रामीण सुधार, स्वदेशी उद्योगों के

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

समर्थन, महिला शिक्षा–की दिशा में भी कार्यरत थीं। इस प्रकार यह दशक उत्तर प्रदेश में महिला छात्र–नेतृत्व के राजनीतिक, सामाजिक और वैचारिक उत्कर्ष का जीवंत उदाहरण है।

1940–1945 : भारत छोड़ो आंदोलन और महिला छात्र नेतृत्व का शिखर

1940–1945 का काल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में "निर्णायक संघर्ष–काल" के रूप में जाना जाता है। विशेष रूप से भारत छोड़ो आंदोलन (1942) ने छात्र–आंदोलनों को अभूतपूर्व गति प्रदान की, और उत्तर प्रदेश की महिला छात्राएँ इस आंदोलन के अग्रिम मोर्चे पर दिखाई दीं। गांधीजी के "करो या मरो" के आह्वान ने पूरे देश में क्रांतिकारी ऊर्जा भर दी। जैसा कि बिपिन चंद्रा लिखते हैं–"भारत छोड़ो आंदोलन वह क्षण था जब छात्र और युवतियाँ आंदोलन की दिशा तय करने वाली निर्णायक शक्ति बन गए थे।"[xii]

अगस्त क्रांति का प्रभाव और महिला छात्राओं की अग्रिम भूमिका– अगस्त 1942 के बाद कांग्रेस नेतृत्व के गिरफ्तार हो जाने पर आंदोलन का नेतृत्व बड़े पैमाने पर छात्रों और युवाओं के हाथ में आ गया। उत्तर प्रदेश की महिला छात्राओं–विशेषकर इलाहाबाद, बनारस और लखनऊ की–ने हड़तालों, रैलियों तथा झंडा–फहराने के कार्यक्रमों का नेतृत्व किया। आर.सी. मजूमदार के अनुसार–"1942 में महिला छात्राओं ने भय को तोड़कर सार्वजनिक क्षेत्र में जिस दृढ़ता से कदम रखा, वह ब्रिटिश सत्ता के लिए अत्यधिक असहजकारी था।"[xiii]

भूमिगत गतिविधियाँ : संदेश पहुंचाना, पर्चे बाँटना, गुप्त बैठकें– सरकारी दमन के चलते आंदोलन भूमिगत हो गया। महिला छात्राओं ने गुप्त संदेश–तंत्र विकसित किया– वे भोजन की टोकरी, पुस्तक–थैले और कपड़ों के भीतर संदेश छिपाकर भूमिगत नेताओं तक पहुँचाती थीं। वाराणसी और इलाहाबाद की छात्राओं ने रात के अंधेरे में चौराहों और बाजारों में पर्चे बाँटे। कई छात्राओं ने अपने छात्रावासों को ही गुप्त बैठकों का केंद्र बना दिया। जूडिथ ब्राउन लिखती हैं–"महिलाओं, विशेषकर छात्राओं, ने भूमिगत आंदोलन को जीवित रखने में अप्रत्याशित भूमिका निभाई।"[xiv]

पुलिस दमन, गिरफ्तारी और यातनाएँ– 1942–1944 के दौरान महिला छात्राओं पर पुलिस दमन अत्यधिक हुआ। लाठीचार्ज, गिरफ़्तारी, कोड़े, रात में घरों पर छापे और मानसिक प्रताड़ना इस काल की आम वास्तविकताएँ थीं। अनेक छात्राओं ने महीनों तक जेल यात्राएँ कीं। फिर भी, वे डरकर पीछे हटने की बजाय अधिक दृढ़ता से आंदोलन में

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

लगी रहीं। जैसा कि बी.आर. नंदा उल्लेख करते हैं–"महिला छात्रों का साहस ब्रिटिश साम्राज्य की नैतिक पराजय का संकेत था।"[xv]

उत्तर प्रदेश के प्रमुख आंदोलन केंद्र : इलाहाबाद, बनारस और लखनऊ

इलाहाबाद विश्वविद्यालय इस काल में भूमिगत गतिविधियों का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र था। यहाँ महिला छात्राओं ने छात्र नेता नारायण दत्त तिवारी और कमलापति त्रिपाठी के साथ मिलकर भूमिगत प्रेस चलाया और संदेशों का आदान–प्रदान किया। बनारस (काशी) में महिला छात्राएँ रेलवे लाइनों पर बैठकर पुलिस को चुनौती देती थीं, जबकि लखनऊ विश्वविद्यालय में छात्राओं ने गिरफ्तारी के बाद जेल में सत्याग्रह और भू–हड़तालें आयोजित कीं।

प्रमुख महिला छात्रा नेता

इस दौर की कुछ उल्लेखनीय छात्राएँ थीं–

- **रामकली देवी :** जिन्होंने इलाहाबाद में भूमिगत प्रेस के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **उषा वर्मा :** बनारस की साहसी छात्रा, जिन्होंने 1942 में छात्र–समूहों को संगठित किया और पिकेटिंग का नेतृत्व किया।
- **इलाहाबाद–वाराणसी की भूमिगत छात्र टीमें :** जिन्होंने ब्रिटिश खुफिया तंत्र को बार–बार विफल किया।

मुस्लिम छात्रा नेताओं की भूमिका और हिंदू–मुस्लिम एकता

अलीगढ़ और लखनऊ की मुस्लिम छात्राओं ने भी भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। मुस्लिम छात्राओं ने पर्दे के पीछे रहकर संदेश पहुँचाए, पर्चे बाँटे और हिंदू–मुस्लिम छात्र समूहों की संयुक्त बैठकें आयोजित कीं। पीटर हार्डी लिखते हैं–"मुस्लिम महिला छात्रों ने राष्ट्रीय एकता को व्यवहारिक रूप में सिद्ध किया।"[xvi]

इस प्रकार 1940–1945 का काल उत्तर प्रदेश में महिला छात्र–नेतृत्व की शक्ति, साहस और वैचारिक परिपक्वता का शिखर था–जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नैतिक और राजनीतिक नींव को दृढ़ करता है।

महिला छात्र–नेतृत्व की विशेषताएँ और रणनीतियाँ

1940 के दशकों तक आते–आते महिला छात्र–नेतृत्व भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक विशिष्ट आयाम बन चुका था। इसकी पहली महत्वपूर्ण विशेषता थी नैतिक नेतृत्व, जो सत्य, अहिंसा, त्याग और सामाजिक न्याय की Gandhian नैतिकता पर आधारित था। महिला छात्रों ने न केवल राजनीतिक संघर्ष में भाग लिया बल्कि एक नैतिक शक्ति के रूप

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

में समाज में प्रेरक भूमिका निभाई। उनकी उपस्थिति ने सभाओं, आंदोलनों और सत्याग्रहों को अधिक समावेशी और संवेदनशील बनाया। दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता थी सांस्कृतिक नेतृत्व, जिसके तहत महिला छात्राओं ने स्वदेशी परंपराओं, खादी, देसी भाषा, लोक–गीत, भजन और सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से राष्ट्रवाद की भावना को गहराई तक पहुँचाया। उनकी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ–रक्षासूत्र, लोक–गीत, झंडा–गीत–आंदोलनों को भावनात्मक बल प्रदान करती थीं। महिला छात्रों ने संगठनात्मक रणनीतियों का भी कुशल प्रयोग किया। वे छात्र–संघों, महिला मंडलों, युवक–युवती संघों और कांग्रेस सेवा दल के साथ निकट सहयोग में काम करती थीं। इन संगठनों ने उन्हें संसाधन, नेटवर्क और सुरक्षा प्रदान की, जिससे वे गुप्त बैठकों, विरोध–रैलियों और पिकेटिंग को प्रभावी ढंग से संचालित कर सकीं। उनकी रणनीतियों में भाषण देना, पर्चे बाँटना, घर–घर संपर्क, सत्याग्रह प्रशिक्षण, स्कूल–कालेज में बहिष्कार अभियान और बाजारों में विदेशी वस्त्रों के विरोध जैसे विविध रूप शामिल थे। भाषण–कला और जन–संपर्क कौशल महिला नेताओं को जनता में विश्वसनीयता दिलाते थे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि महिला छात्र–नेतृत्व का आधार था व्यक्तिगत बलिदान और सामूहिक संगठन कौशल। छात्राओं ने जेल यात्राएँ कीं, पुलिस दमन सहा, परिवार और समाज के दबावों का सामना किया, लेकिन पीछे नहीं हटीं। वे संगठन निर्माण, संदेश–संचार, टीम मैनेजमेंट और जोखिम–प्रबंधन में अत्यंत प्रभावी थीं। यह नेतृत्व केवल भावनात्मक नहीं था, बल्कि अत्यंत व्यावहारिक और रणनीतिक था।

महिला छात्राओं का सामाजिक और राजनीतिक योगदान

महिला छात्राओं का योगदान केवल राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा; उन्होंने सामाजिक सुधार और व्यापक सामाजिक पुनर्निर्माण में भी अहम भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व का पहला बड़ा प्रभाव था महिला शिक्षा का विस्तार। महिला छात्राएँ स्वयं उदाहरण बनकर सामने आईं–उनकी सार्वजनिक सहभागिता ने अन्य परिवारों को भी अपनी बेटियों को स्कूल–कॉलेज भेजने के लिए प्रेरित किया। महिला छात्राओं ने महिला शिक्षा के लिए जन–अभियान चलाए, स्वदेशी विद्यालयों के लिए धन–संग्रह किया और ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा–जागरूकता फैलाने का कार्य किया। इसके अतिरिक्त, महिला छात्राएँ जाति, लिंग और वर्ग आधारित भेदभाव के विरुद्ध एक मजबूत आवाज़ बनकर उभरीं। उन्होंने समाज में व्याप्त पितृसत्ता, पर्दा–प्रथा, बाल–विवाह, दहेज जैसी कुरीतियों का विरोध किया। आंदोलन के दौरान वे दलित महिलाओं, मुस्लिम महिलाओं और ग्रामीण गरीब महिलाओं

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

के बीच जाकर उनके अधिकारों और शिक्षा के लिए प्रचार करती रहीं। यह सामाजिक समावेश भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को सामाजिक न्याय की दिशा में आगे बढ़ाता था।

महिला छात्राओं का तीसरा प्रमुख योगदान था ग्रामीण क्षेत्रों में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार। वह केवल शहरों तक सीमित नहीं रहीं; कई छात्रा–दल गाँवों में जाकर सभाएँ करती थीं, चरखा चलाना सिखाती थीं, स्वदेशी वस्त्रों का प्रचार करती थीं और ब्रिटिश अत्याचारों की जानकारी देती थीं। उनकी उपस्थिति ग्रामीण समाज में अभूतपूर्व प्रभाव छोड़ती थी क्योंकि महिलाओं के बीच महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता तेजी से स्वीकार्य बनती गई। सबसे महत्वपूर्ण, महिला छात्राओं ने आधुनिक महिला सशक्तिकरण की नींव रखी। उन्होंने दिखाया कि शिक्षा, राजनीतिक भागीदारी, आत्मविश्वास और सामाजिक नेतृत्व महिलाओं की स्वतंत्रता और समानता के अनिवार्य आधार हैं। स्वतंत्रता के बाद जो महिला आंदोलन उभरे, वे इन्हीं छात्राओं द्वारा स्थापित परंपराओं और अनुभवों से प्रेरित थे। इस प्रकार, महिला छात्र–नेतृत्व न केवल स्वतंत्रता संग्राम का सक्रिय घटक था बल्कि आधुनिक भारत के सामाजिक–राजनीतिक ढाँचे को आकार देने वाली परिवर्तनकारी शक्ति भी था।

निष्कर्ष

1905 से 1945 के बीच उत्तर प्रदेश की महिला छात्राओं की सक्रियता भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास का एक ऐसा महत्वपूर्ण पहलू है, जिसे लंबे समय तक उपेक्षित किया गया। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि महिला छात्राएँ केवल सहायक भूमिका निभाने वाली प्रतिभागी नहीं थीं, बल्कि वे आंदोलन की वैचारिक, नैतिक और रणनीतिक शक्ति के रूप में उभरकर सामने आईं। स्वदेशी आंदोलन में विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार से लेकर असहयोग और खिलाफत आंदोलनों में सार्वजनिक सभाओं, पिकेटिंग और राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना तक–महिला छात्राओं ने राष्ट्रवादी चेतना को सामाजिक स्तर पर फैलाने में निर्णायक भूमिका निभाई। 1930 के दशक में सविनय अवज्ञा आंदोलन ने उनकी भागीदारी को और गहरा किया, जहाँ उन्होंने सत्याग्रह प्रशिक्षण शिविरों, बहिष्कार अभियानों, महिला छात्र–संघों और स्वयंसेवक दलों के माध्यम से संगठनात्मक कौशल और रणनीतिक दक्षता प्रदर्शित की। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में महिला छात्राएँ आंदोलन की "फ्रंटलाइन" बनकर उभरीं–उन्होंने गुप्त संदेश तंत्र, भूमिगत प्रेस, पर्चों का वितरण, पुलिस अत्याचारों का विरोध और जनता को प्रेरित करने जैसे जोखिमपूर्ण कार्यों का जिम्मा उठाया। यह साहस उस समय के सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण को देखते हुए असाधारण था।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

महिला छात्राओं का योगदान सामाजिक सुधार के क्षेत्र में भी अत्यंत प्रभावशाली रहा। उन्होंने महिला शिक्षा, जातीय–लैंगिक समानता, पर्दा और कुरीतियों के विरोध, तथा ग्रामीण चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि महिला छात्र–नेतृत्व ने आधुनिक भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण की आधारशिला रखी–विद्या, नेतृत्व, आत्मविश्वास और राष्ट्रीय चेतना का यह अद्‌भुत संगम आगे चलकर स्वतंत्र भारत में महिला अधिकार आंदोलनों के लिए प्रेरणा बना। इस प्रकार, उत्तर प्रदेश की महिला छात्राओं का योगदान केवल स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा नहीं था, बल्कि वह आधुनिक भारत की सामाजिक–राजनीतिक चेतना को आकार देने वाला परिवर्तनकारी अध्याय था–जिसकी ऐतिहासिक महत्ता सदैव स्मरणीय रहेगी।

संदर्भ

[i]. चंद्रा, बिपिन, इंडियाज़ स्ट्रगल फ़ॉर इंडिपेन्डेन्स, पेंगुइन, नई दिल्ली, 1988, पृ. 128

[ii]. मजूमदार, आर.सी., हिस्ट्री ऑफ़ फ़्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, मुंशीराम मनोहरलाल, नई दिल्ली, 1957, पृ. 275

[iii]. मिनॉल्ट, गेल, सीक्लूडेड स्कॉलर्स, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 1998, पृ. 162

[iv]. नंदा, बी.आर., मेकर्स ऑफ़ मॉडर्न इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 1985, पृ. 181

[v]. चंद्रा, बिपिन, इंडियाज़ स्ट्रगल फ़ॉर इंडिपेन्डेन्स, पेंगुइन, नई दिल्ली, 1988, पृ. 142

[vi]. मजूमदार, आर.सी., हिस्ट्री ऑफ़ फ़्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, मुंशीराम मनोहरलाल, नई दिल्ली, 1957, पृ. 268

[vii]. मिनॉल्ट, गेल, सीक्लूडेड स्कॉलर्स, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 1998, पृ. 158

[viii]. ब्राउन, जूडिथ, गाँधीज़ राइज़ टू पावर, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, 1972, पृ. 166

[ix]. हार्डी, पीटर, द मुस्लिम्स ऑफ़ ब्रिटिश इंडिया, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1972, पृ. 120

[x]. चंद्रा, बिपिन, इंडियाज़ स्ट्रगल फ़ॉर इंडिपेन्डेन्स, पेंगुइन, नई दिल्ली, 1988, पृ. 223

[xi]. मजूमदार, आर.सी., हिस्ट्री ऑफ़ फ़्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, मुंशीराम मनोहरलाल, नई दिल्ली, 1957, पृ. 334

[xii]. चंद्रा, बिपिन, इंडियाज़ स्ट्रगल फ़ॉर इंडिपेन्डेन्स, पेंगुइन, नई दिल्ली, 1988, पृ. 426.

[xiii]. मजूमदार, आर.सी., हिस्ट्री ऑफ़ फ़्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, मुंशीराम मनोहरलाल, नई दिल्ली, 1957, पृ. 371.

[xiv]. ब्राउन, जूडिथ, गाँधीज़ राइज़ टू पावर, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, 1972, पृ. 214

[xv]. नंदा, बी.आर., मेकर्स ऑफ़ मॉडर्न इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 1985, पृ. 203

[xvi]. हार्डी, पीटर, द मुस्लिम्स ऑफ़ ब्रिटिश इंडिया, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1972, पृ. 128